B·A· PART - 1
हिन्दी - (प्रतिष्ठा) द्वितीय पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य भाग-1

प्रश्न :- रीतिबद्ध काव्य की प्रवृत्तियाँ बताये ?

उत्तर :- रीतिकाल में रीति-तत्व की प्रधानता रही और कवियों ने काव्यांग निरूपण की ओर अधिक ध्यान दिया। लक्षण ग्रंथों की रचना करने वाले इन कवियों को रीतिबद्ध कवि कहा जाता है क्योंकि ये रीति-तत्व का निरूपण करने में ही अपने कविकर्म की सफलता मानते थे। हिन्दी में रीतिग्रंथों की रचना यद्यपि प्रमुख रूप से रीतिकाल में हुई, तथापि यह प्रवृत्ति भक्तिकाल में प्रारम्भ हो गयी थी।

संक्षेप में रीतिबद्ध कवियों की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है।

1. रीति निरूपण :-

रीतिबद्ध कवियों ने रीति निरूपण को प्रमुखता दी। प्रायः सभी कवियों ने काव्यांगों का निरूपण करते हुए लक्षण ग्रंथों की रचना की। इन लक्षण ग्रंथों में काव्यांगों के लक्षण एवं उदाहरण दिये गये हैं।

रीति निरूपण प्रायः तीन दिशाओं में हुआ— अलंकार निरूपण, नायिका भेद निरूपण एवं छंद निरूपण। रस का विवेचन कुछ ही कवियों ने किया है। शृंगार रस के विवेचन के अतिरिक्त अन्य रसों का विवेचन बहुत कम किया गया है। रीतिकाल के कुछ प्रमुख रीतिबद्ध कवि और उनके ग्रंथों के नाम हैं— चिंतामणि (काव्यविवेक, कविकुलकल्पतरु, शृंगारमंजरी), मतिराम (अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी), भूषण (अलंकार प्रकाश), जसवंत सिंह (भाषा-भूषण), कुलपति मिश्र (रस रहस्य), देव (भाव विलास, काव्य रसायन,) मिखारीदास - (काव्य निर्णय, रससारांश, छंद प्रकाश), कृष्ण कवि-(अलंकार रत्नाकर), पद्माकर-(जगद्विनोद, पद्माभरण), प्रतापसाहि— (व्यंग्यार्थ कौमुदी) आदि।

(२) आचार्यत्व का अभाव :-

आचार्यत्व का अभाव के अन्तर्गत रीतिबद्ध कवियों के द्वारा किया गया रीति निरूपण एकांगी, अधकचरा एवं अपरिपक्व है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसी कारण रीतिकालीन कवियों के आचार्यत्व पर टिप्पणी करते हुए लिखा है, — "हिन्दी में लक्षण ग्रंथों की परिपाटी पर रचना करने वाले जो सैकड़ों कवि हुए, वे आचार्य कोटि में नहीं आ सकते, वे वास्तव में कवि ही थे।" इस संबंध में इनकी कई त्रुटियों का उल्लेख किया जा सकता है। आचार्यत्व के लिए जिस सूक्ष्म विवेचन और पर्यालोचना शक्ति की अपेक्षा होती है, उसका अभाव इन रीतिग्रन्थकारों में था। ये कवि एक दोहे में अपर्याप्त लक्षण देकर अपने कविकर्म में लीन हो जाते थे। इन्होंने संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा का अनुसरण नहीं किया, जिसमें तर्कपूर्ण खण्डन-मण्डन एवं नए सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता था। यही नहीं अपितु इनका काव्य-सम्बन्धी ज्ञान भी अधूरा, अधकचरा एवं एकांगी था। इसलिए कहीं-कहीं तो इन्होंने भ्रांत लक्षण तक दे दिए। उदाहरण के लिए "सूषण" द्वारा दिये गये अलंकारों के उदाहरण लिये जा सकते हैं। शुक्ल जी के अनुसार — "इनके बहुत से उदाहरण अलंकार के न होकर भाव के हो गए हैं।"

(३) मौलिकता का अभाव :-

रीतिबद्ध कवियों के द्वारा किये गये काव्यांग निरूपण में मौलिकता का अभाव है। इन ~~कवियों~~ कवियों ने यद्यपि सैकड़ों रीतिग्रंथ लिखे, तथापि किसी मौलिक सिद्धान्त का प्रतिपादन रीति-ग्रंथकार नहीं कर सके।

वास्तव में इन्होंने संस्कृत काव्यशास्त्र के ग्रंथों का ब्रजभाषा में अनुवाद-मात्र करने का कार्य किया, इसलिए इसमें मौलिकता का तो प्रश्न ही नहीं है। रीतिकाल के लक्षण ग्रंथकार कोई ऐसी नवीन एवं मौलिक उद्भावना नहीं कर सके जो काव्यशास्त्र को नई दिशा देती। अलंकार आदि के निरूपण के लिए इन्होंने अंधानुकरण से काम लिया और मौलिकता का परिचय नहीं दिया, वस्तुतः ये रीति-ग्रंथकार काव्य मर्मज्ञ तो थे, पर आचार्यत्व के लिए जिस प्रकार के गुणों की आवश्यकता होती है उसका अभाव होने के कारण वे नवीन एवं मौलिक सिद्धान्तों की उद्भावना नहीं कर सके। संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रभाव से मुक्त होकर स्वतंत्र विवेचन करने का न तो इनमें साहस ही था और न ही वैसी योग्यता थी। आचार्य बनने के लिए जो मौलिक प्रतिभा अपेक्षित होती है, उसके अभाव में इन्होंने स्थापित शास्त्र मत को अधिक महत्व दिया तथा अपने स्वतंत्र मत को प्रतिपादित करने का साहस नहीं दिखाया।

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो० नं०- 7909046087
दिनांक -२४ . ०१ . २०२२